प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

गेहूँ की उत्पादकता में वृद्धि हेतु नए नजरिए की आवश्यकता: डा. सिंह

पंतनगर। २२ फरवरी, २०१७। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आज अंतर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूँ सुधार केन्द्र (सिमिट) के वैज्ञानिक डा. रवि पी. सिंह द्वारा आज 'वैश्विक गेहूँ सुधार-उद्देश्य एवं प्रजनन रणनीति' विषय पर व्याख्यान दिया गया। पंतनगर एग्रीकल्चर एल्यूमनाई सोसायटी (पास) द्वारा आयोजित इस व्याख्यान के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. जे. कुमार, अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे।

डा. सिंह ने अपने व्याख्यान में सिमिट द्वारा विश्व स्तर पर गेहूँ की उत्पादकता बढ़ाने के लिए गेहूँ की प्रजातियों में चलाये जा रहे सुधार के कार्यक्रम की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गेहूँ विकासशील देशों के लोगों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला दूसरे नम्बर का खाद्यान्न है तथा ८९ देशों के लगभग २५० करोड़ लोगों का भोजन है। खाद्य एवं कृषि संस्था (एफएओ) द्वारा गेहूँ की उत्पादकता प्रतिवर्ष १.६ प्रतिशत बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने कहा कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने में अनेक चुनौतियाँ सामने हैं, जिनमें पर्यावरण में बदलाव, भू-जल स्तर में कमी, ऊर्जा एवं उर्वरकों की बढ़ती कीमत, कीट एवं बीमारियाँ तथा कृषि शोध क्षमता में हो रही कमी, इत्यादि प्रमुख हैं। डा. सिंह ने सिमिट के गेहूँ के प्रजनन कार्यक्रम को विस्तार से बताया तथा अपने केन्द्र के गेहूँ में उत्पादकता की क्षमता, उत्पादकता में वृद्धि, रतुआ रोग के प्रति अवरोधी प्रजातियाँ, यूजी ९९ के प्रति अवरोधी प्रजातियाँ, इत्यादि के बारे में बताते हुए सिमिट में गेहूँ की गुणवत्ता में हो रहे सुधार की जानकारी दी। इसके अतिरिक्त उन्होंने बताया कि कुपोषण को दूर करने हेतु जैविक रूप से सुदृढ़ प्रजातियाँ जिनमें सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे जस्ता, लोहा, इत्यादि की मात्रा अधिक हो, के विकास पर भी ध्यान दिया जा रहा है। अंत में डा. सिंह ने गेहूँ पर किये जाने वाले शोध के लिए नए नजरिये को अपनाए जाने की आवश्यकता बतायी जिससे प्रजनन के साथ-साथ विभिन्न सस्य क्रियाओं के शोध की ओर भी ध्यान दिये जाने के लिए कहा।

कुलपति, डा. जे. कुमार, ने डा. सिंह को शॉल ओढाकर एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने डा. सिंह के व्याख्यान को वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों के लिए वृहद जानकारीयुक्त एवं मार्गदर्शन देने वाला बताया। साथ ही आशा प्रकट की कि विश्वविद्यालय में गेहूँ पर किए जाने वाले शोध कार्यक्रमों में डा. सिंह द्वारा उजागर किये गये पहलुओं पर ध्यान दिया जाएगा तथा पौष्टिक गेहूँ का उत्पादन आने वाले वर्षों में सच साबित होगा।

इससे पूर्व अधिष्ठाता कृषि, डा. डी.एस. पाण्डे, ने डा. रवि पी. सिंह के जीवन के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के प्रारम्भ में पास के सचिव, डा. जे.पी. जायसवाल, ने डा. सिंह एवं कुलपति के साथ-साथ उपस्थित वैज्ञानिक एवं विद्यार्थियों का स्वागत किया व कार्यक्रम का संचालन किया। अंत में पास की कोषाध्यक्ष, डा. ओमवती वर्मा, ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

डा. रवि पी. सिंह को शॉल ओढाकर एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित करते कुलपति, डा. जे. कुमार।